संगीतकार सी. रामचन्द्र द्वारा प्रयुक्त रसज्ञों का संगीत

प्रो. शर्मिला टेलर
वनस्थली विद्यापीठ, टोंक (राज.)

तृप्ति अग्रवाल
शोध छात्रा, संगीत विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, टोंक (राज.)

फ़िल्म संगीत आज लोकप्रियता की चरम सीमा पर पहुँच गया है। साधारण संगीत से लेकर सुगम व शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी अपना अधिकार जमा चुका है। शास्त्रीय संगीत की शैली पर गाये हुए कुछ गीत बड़े प्रसिद्ध हुए हैं। वे शास्त्रीय संगीत के कतिपय श्रेष्ठतम गीतों की तुलना में रखे जा सकते हैं। इसी प्रकार लोकगीतों अथवा आमजनीय गीतों से जहाँ फ़िल्म संगीत का निर्माण हुआ है, वहीं फ़िल्म संगीत ने भी लोक अथवा जनगीतों को नया जीवन देकर संवारा है। यदि ऐसा न होता तो आज जो फ़िल्म संगीत की अति लोकप्रियता है, वह न होती। लोकगीतों को फ़िल्म संगीत ने पुनर्जन्म प्रदान किया है और उसकी डूबती परम्परा को तीव्र प्रवाह दिया है। लोकगीतों की सरलता, सहजता के कारण फ़िल्मी गीत लोगों की जुबान पर आसानी से चढ़ जाते हैं। यहाँ तक कि अबोध बच्चे भी उन्हें विभोर होकर गाते दोहराते हैं। ये सभी रसज्ञों की श्रेणी में आते हैं। रसज्ञ अर्थात् रस लेने वाले या यूँ कहे कि संगीत का आनंद लेने वाले। रसज्ञ दो प्रकार के होते है – एक वो जो शास्त्रीय संगीत की जानकारी रखते हैं तथा उसका लुत्फ उठाते हैं, दूसरे जिन्हें शास्त्रीयता के बारे में कोई जानकारी नहीं होती, सिर्फ संगीत सुनकर वो मनोरंजन करते है तथा संगीत से आनंदमग्न हो जाते है। अबोध बच्चे भी इसी श्रेणी में आते हैं।

फ़िल्म संगीत आने वाले कल का जनसंगीत है। जनसंगीत वही होता है जो आम जनता में इतना लोकप्रिय हो कि वह सभी के कंठों में समाया रहे। फ़िल्म संगीत में यह पूरी क्षमता है कि वह सीमा–रेखाओं और आडम्बरों को तोड़कर वर्तमान देश, काल व परिस्थिति का प्रतिनिधित्व करे। कुछ प्रसिद्ध संगीतकार स्वयं यह तथ्य स्वीकार करते हैं कि हम अपनी धुनों के निर्माण में प्रायः लोकधुनों का भी प्रश्रय लेते हैं और यह इसलिए भी ज़रूरी है कि फ़िल्म संगीत जन–जन का संगीत है और उसके साथ व्यवसाय भी जुड़ा हुआ है। इसलिए उसके निर्माण में जन रूचि का पूरा ख़्याल रखना नितान्त आवश्यक है। भारतीय फ़िल्म संगीत की अनेक उपलब्धियाँ हैं, उनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय यही है कि पुराने ख़्यालात के लोगों का विरोध करते हुए यह अधिक से अधिक जनप्रिय हुआ हैं। इससे यही सिद्ध होता है कि फ़िल्म संगीत में समाज के हरेक श्रेणी के व्यक्ति को पंसद आने वाले स्वाभाविक गुण हैं। इसका श्रेय फ़िल्म संगीतकारों को जाता है जो अपनी कल्पनाओं एवं विचारशक्ति के माध्यम से संगीत में कुछ नये आविष्कार करने में सफल हो जाते हैं। उनमें से संगीतकार सी. रामचन्द्र ऐसे संगीतकार हैं जिनके नये आविष्कार से हमारे संगीत में रोचकता उत्पन्न हुई है, यह निःसन्देह प्रशंसा के योग्य है।

सी. रामचन्द्र बड़े ही प्रतिभावान अनुभवी तथा हर छोटी–छोटी चीज से प्रेरित होने वाले थे। इसी कारण इन्होंने अपने गीतों में भी सभी प्रकार के संगीत का तरह–तरह से प्रयोग किया। संगीत की कोई भी विधा, चाहे वह शास्त्रीय हो, उपशास्त्रीय हो, लोकसंगीत हो या क़व्वाली या फिर कोई ग़ैरफ़िल्मी रचना हो, इनसे अछूती नहीं रही है। आर्केस्ट्रा में भी इन्होंने अभिनव प्रयोग किये हैं। गीत को प्राकृतिक शैली के बिना खींचतान के तोड़े मरोड़े प्रस्तुत करना उनकी विशेषता थी। प्रसिद्ध ग़ैरफ़िल्मी गीत ''ऐ मेरे वतन के लोगों'' सी. रामचन्द्र द्वारा ही निबद्ध संगीत है, जो आज भी लोगों के दिल में एक मिसाल क़ायम किये हुए है।

सी. रामचन्द्र ने शास्त्रीय संगीत को ध्यान में रखते हुए जिन फ़िल्मों में संगीत दिया उनमें 'अनारकली' फ़िल्म ने सर्वाधिक सफलता सी. रामचन्द्र को दी। गीत एवं पार्श्व संगीत दोनों ही दृष्टि से यह अत्यन्त सफल हुआ। इस फ़िल्म के गीतों में उनकी कम से कम वाद्ययंत्र प्रयोग करने की शैली और भी निख़र उठी। राग वागेश्री में निबद्ध 'जाग दर्द ए इश्क़ जाग' और अहीर भैरव में 'दुआ कर गमे दिल' को भुला सकना आज भी असंभव है। फ़िल्म 'नवरंग' का संगीत हर दृष्टि से सफल रहा। गीत 'आधा है चन्द्रमा रात आधी' राग मालकोंस पर आधारित प्रसिद्ध गीत है। 'जब दिल को सताये गम' (राग–जौनपुरी) 'धीरे से आजा री अंखियन' (पीलू), 'कैसे जाऊँ जमुना के तीर' (भैरवी), 'राधा ना बोले ना बोले' राग (बागेश्री) में आदि गीतों में सी. रामचन्द्र का संगीत लोकप्रिय हुआ है। संगीतकार सी. रामचन्द्र की पच्चीस से भी ज्यादा ऐसी फ़िल्मों की जगह–जगह रजत जयन्ती मनाई गई, जिनमें संगीत का विशेष रूप से योगदान था। उन्होंने भारतीय फ़िल्मों में विदेशी संगीत का पर्याप्त प्रयोग किया। फ़िल्म संगीत में पाश्चात्य संगीत का एहसास कराने वाली फ़िल्म 'शहनाई' (1947) का गीत 'आना मेरी जान संडे के संडे' पाश्चात्य संगीत पर आधारित पहला गीत होने के कारण इसका ऐतिहासिक महत्त्व है। इसके स्वर–ताल भारतीय थे। 'मिस्टर जॉन ओ बाबा खान' (बारिश), 'गोरे गोरे ओ बाँके छोरे' (समाधि), 'ईना मीना डीका' जैसी कई रचनाएँ पाश्चात्य शैली पर आधारित थीं। (अलबेला के 'गोआ' छाप संगीत ने सर्वत्र धूम मचा दी)

सी. रामचन्द्र ने पाश्चात्य एवं मध्यपूर्व राष्ट्रों के संगीत तत्त्वों को हिन्दुस्तानी व सिने संगीत में लाकर प्रयोग किये। ऑर्केस्ट्रा में काँगो–बाँगो, ट्रम्पेट, गिटार, क्लेरिनेट, सैक्सोफोन तथा हारमोनिका जैसे विदेशी वाद्यों को शामिल किया तथा अलग–अलग प्रकार की

शैली का प्रयोग किया। उन्होंने पहली बार जिस शैली का प्रयोग किया उसमें हास्य प्रधान, कोरस प्रधान तथा जिंदादिल गीतों की अधिकता है। जैसे –

'शहनाई' फ़िल्म का गीत ''आना मेरी जान संडे के संडे'' में 'मेरी' शब्द का उच्चारण हास्य की सृष्टि करता है।

ध फ़िल्म सरगम का गीत' मैं हूँ एक खलासी, मेरानाम भीमपलासी'' भारतीय फ़िल्मों में रॉक एण्ड रोल का पहला प्रयोग माना जाता है। इस फ़िल्म का 'मौसमे बहार यार' अरबी शैली का पहला गीत है।

ध फ़िल्म 'ख़्जाना' (1951) की गीत 'बावड़ी बूबडी बम' में लेटिन, अमेरिकी और अरेबियन बीट्स की झलक मिलती है।

ध फ़िल्म 'सरगम' का ही एक गीत' सबसे भला रूपेया'' में पाश्चात्य लोक गीत और रिद्म का प्रयोग हुआ है जो हिन्दी फ़िल्मों में पहली बार किया गया था। क्लव डांस वाले गीतों की फ़िल्म 'अलबेला' में शुरूआत मानी जा सकती है। गीत 'शोला जो भड़के' में बाँगो, ट्रम्पेट, क्लेरिनेट, सैक्सोफोन के असर से एक उल्लास एवं हंसी–मजाक के वातावरण को निर्मित किया गया है।

विदेशी एवं भारतीय वाद्यों का सुंदर समन्वय भी इनके अनेक गीतों में मिलता है, जैसे 'शाम ढले खिड़की तले', 'भोली सूरत दिल के खोटे', 'किस्मत की हवा कभी' आदि।

विदेशी संगीत का प्रयोग करने के अतिरिक्त उन्होंने लोकसंगीत को भी अपने संगीत में उचित स्थान दिया। 'नदिया दे पार' के गीत आज भी अत्यन्त मधुर, सुरीले व सहज लगते हैं। आकर्षक ग्राम्य शैली में बने गीत 'मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार', 'दिल लेके भागा' कभी पुराने नहीं पड़ेंगे। पंजाब की बहुप्रचलित लोकधुन 'हीर' पर आधारित गीत' 'ऐ बादे सवां आहिस्ता चल', गीत अपने आप में अनूठे प्रतीत होते हैं।

सी. रामचन्द्र की एक अद्वितीय रचना है – 'रंग दे रे जीवन की चुनरिया' एक प्रसिद्ध होरी गीत है। 'जा रे हट नटखट' गुजराती लोकसंगीत, 'तू छिपी है कहाँ' गीत राग मालकौंस में निब्द्ध प्रसिद्ध फ़िल्मी गीत है। इनके स्वरों में वह सब कुछ है जो गीत को उच्चतम संगीत का बाना पहना सके।

इस संगीतकार के विषय में एक उल्लेखनीय बात यह है कि वह स्वयं गायक भी थे। उन्होंने अपनी फ़िल्मों तथा अन्य फ़िल्मों में भी कुछ गीत गाये जो अत्यन्त लोकप्रिय हुए। 'नास्तिक' में 'देख तेरे संसार की हालत' और 'आजाद' में लताजी के साथ 'कितना हँसी है मौसम' आदि उनकी रचनाओं में ऐसी समृद्धि व सफाई थी कि उसने श्रोताओं या यूँ कह सकते है रसज्ञों पर तुरंत प्रभाव डाला। रिद्म का उस्ताद होने के नाते उन्होंने अपने संगीत में ट्यूनिंग के प्रभाव और वाद्यवृंदता के चढ़ाव को ऐसे मिलाया कि उसमें एक प्रकार का रंग और सरसता आ गई और फ़िल्म संगीत के क्षेत्र मे वह महामानव की तरह चढ़ गये। सी. रामचन्द्र की लोकप्रिय फ़िल्मों में फ़िल्म शहनाई, नवरंग, आजाद, पतंगा, सरगम, अलबेला, परछाई, अनारकली, झांझर, शगूफ़ा, नास्तिक, कवि, यास्मीन, पहली झलक आदि प्रसिद्ध हैं। उनकी 3 फ़िल्मों ने गोल्ड़न जूबली मनाई तथा लगभग 25 फ़िल्मों ने सिल्वर जूबली मनाई। सी. रामचन्द्र द्वारा प्रयुक्त ये सदाबहार गीत सदियों तक याद किए जाते रहेंगे और आगे आने वाली युवा पीढ़ी, के लिए प्रेरणा के स्त्रोत होंगे।

सन्दर्भ सूची –

- वर्मा, विजय (सितम्बर 2011). हिन्दी फिल्म संगीत, स्वर सरिता
- भार्गव, अनिल (2006). हिन्दी फिल्म संगीत 75 वर्षों का सफर, जयपुर : वांग्मय प्रकाशन, प्रथम संस्करण
- राग, पंकज (2017). धुनों की यात्रा, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, चौथा संस्करण, पेज नं. 163